

Dr. Sunil Kr. Sharma

Assistant Professor

(Guest)

D.B. College Jaynagar

Dept. of Psychology

Study material

B.A. Part-1 (H)

Paper-1st.

Date - 30-05-2020

~~01-06-2020~~

Thinking & Problem

Mental Set

मनोवैज्ञानिकों चिन्तन (Thinking) या समस्या समाधान (Problem Solving) व्यवहार में मानसिक तत्परता (Mental Set) के महत्व को काफी गहन रूप में अध्ययन किया है। मानसिक तत्परता या संक्षेप में तत्परता से तात्पर्य प्राणी की ऐसी मानसिक स्थिति (Mental Set) से होती है, जिसके सहित वह दिये गये समस्या का समाधान करने के पहले व्यक्ति एक प्रकार की मानसिक तैयारी (Mental Preparedness) करता है कि इसके समाधान के लिए वह किस तरह अनुक्रिया (Response) करेगा। इसे ही मानसिक तत्परता या वृत्ति (Mental Set) की संज्ञा दी जाती है।

मनोवैज्ञानिकों द्वारा किए गए गिन-गिन प्रयोगों से यह स्पष्ट हो गया है कि तत्परता से समस्या के समाधान में मदद (Facilitation) भी मिलती है तथा बाधा (Interference) भी पहुँचती है। तत्परता के इन दोनों रूपों को प्रभावों को विफलाने के लिए मनोवैज्ञानिकों ने प्रयोज्यों (Subjects) के तत्परता से को दो तरीकों (ways) से प्रभावित करने प्रयोग किए हैं। - पहला तरीका वह है जिसमें प्रयोज्यों को कुछ खास खास शब्दिक निर्देश दिए जाते हैं (verbal instruction) देकर उनके तत्परता को प्रभावित करने की कोशिश की जाती है। तथा दूसरा तरीका वह है जिसमें प्रयोज्यों (Subjects)

की पूर्व अनुभूतियों (Past Experiences) को नियंत्रित
 करके उसके तापता को प्रभावित करने की
 कोशिश की गई। पहला तरीका द्वारा आवेकता
 ऐसा प्रयोग किया गया जिससे यह पता चलता
 है कि तापता से किसी समस्या को समाधान
 में किस तरह से मदद मिलती है। तापता
 इतने के इस प्रभाव (Effect) को अनुकारी या
 लाभकारी प्रभाव (Advantageous Effect) कहा जाता है।
 दूसरे तरीके से आवेकता से प्रयोग किया गया
 है जिससे यह पता चलता है कि तापता,
 विशेषकर, गलत तापता से समस्या को समाधान
 में किस तरह के बाधा पहुंचाती है या इसका
 समाधान विलम्बित हो जाता है। मनोविज्ञानियों ने
 तापता के इस प्रभाव को अनुकारी प्रभाव
 (disadvantageous effect) कहा है। इन दोनों
 तरह के प्रभावों (Effect) की चर्चा अलग
 अलग निम्नांकित है।

Next days